शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

महान शिक्षाविद्ः सर आशुतोष मुकर्जी

संजीव कुमार
शोध छात्र, इतिहास विभाग
एन0ए0एस0, (पी0जी0) कॉलेज मेरठ
Email : sanjeevauni003@gmail.com

सारांश

''नाइट की उपाधि से सम्मानित आशुतोष मुकर्जी बंगाल के बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनकी गिनती देश के महान शिक्षाविद्ों में की जाती है। वे एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक भी थे। उन्होंनें कलकत्ता उच्चन्यायालय के न्यायाधीश, कलकत्ता विश्वविद्यालय के उप कुलपति एवं कई महत्त्वपूर्ण आयोगों के सदस्य एवं अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया। आशुतोष मुकर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय को शैक्षिक संस्थान से अनुसंधान संस्थान में बदलने का महान कार्य किया। उन्होंने सन् 1906 ई0 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में बांगला भाषा में कक्षायें शुरू कराई। भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिये आशुतोष मुकर्जी ने 1914 ई0 में भारतीय भाषाओं में एम0ए0 की कक्षायें शुरू कराई। आशुतोष मुकर्जी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्य न केवल बांगला भाषा के लिये बल्कि भारतीय शिक्षा के इतिहास में भी मील का पत्थर साबित हुए।''

मुख्य शब्द–*सर आशुतोष मुकर्जी, शिक्षाविद्, कलकत्ता, आयोग, शिक्षा, परीक्षा, बंगला, विश्वविद्यालय, उपकुलपति, बंगाल।*

प्रस्तावना

आधुनिक भारत के निर्माताओं में जहाँ उंगलियों पर गिने जाने योग्य महापुरूषों के नाम लिये जाते हैं उनमें डॉ0 श्यामा प्रसाद मुकर्जी के आदर्श रहे उनके पिता सर आशुतोष मुकर्जी का गौरवपूर्ण स्थान है। सर आशुतोष मुकर्जी की गणना देश के महान शिक्षाविद्ों में की जाती है। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति, कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एवं कई महत्त्वपूर्ण आयोगों के सदस्य एवं अध्यक्ष भी रहे। उनका जन्म बंगाल के एक प्रतिष्ठित चिकित्सक गंगा प्रसाद मुकर्जी के घर मध्य कलकत्ता में 29 जून 1864 में हुआ।[1] इनकी माता का नाम जगततारिणी था।

पिताश्री गंगा प्रसाद ने बेटे आशुतोष की शिक्षा–दीक्षा का समुचित प्रबन्ध किया। साथ ही साथ उनका पालन–पोषण कट्टर धर्मनिष्ठ किन्तु उदार वातावरण में हुआ तथा उन्हें उस समय कलकत्ता में उपलब्ध श्रेष्ठतम पाश्चात्य शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध भी किया। आशुतोष को

ईश्वर ने बचपन से ही आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति दी थी। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से ही ग्रहण की थी। आशुतोष छात्र जीवन से ही कठिन परिश्रमी थे और 15 से 18 घण्टे तक काम करते थे। अध्ययन के समय झपकी न आ जाये, इसके लिए पिता श्री गंगाप्रसाद ने एक ऊँची मेज बनवायी थी और इसी मेज पर खड़े होकर आशुतोष पढ़ाई करते थे। इसी तरह उन्होंने इनका भोजन भी बहुत ही संतुलित कर दिया। जीवन के इस कठिन दौर में अपनी प्रतिभा के बल पर आशुतोष अपने बाल्यकाल में ही ख्याति प्राप्त करने लगे। यही वह समय था जब आशुतोष छात्रजीवन में ही ''लन्दन मैथेमैटिकल सोसायटी'' के सदस्य बने और उन्होंने यहाँ कई ऐसे अनसुलझे ज्यामितिक प्रश्न सुलझाये। जिनमें से कुछ तो इतने महत्वपूर्ण थे कि वे इंग्लैण्ड में गणित में मौलिक शोध के रूप में स्थापित सिद्धान्त बने, तथा उनका नाम भी उनके नाम पर ही 'मुकर्जी थ्योरम' रखा गया। गणित के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान, संस्कृत और कानून विषयों में भी वे इतने निपुण हो गए कि उनके समकालीन लोग और मित्र समूह उन्हें सरस्वती का अवतार समझने लगे।[2] आशुतोष मुकर्जी ने 1883 ई0 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी0ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण की। जिसके लिए उनको प्रतिष्ठित प्रेमचंद रामचंद छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। ताकि वह आगे गणित में स्नात्कोत्तर की पढ़ाई पूरी कर सके। 1885 ई0 में उन्होंने भौतिक विज्ञान में परास्नातक (एम0ए0) की परीक्षा उर्त्तीण की। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से ही दो उपाधियाँ प्राप्त करने वाले प्रथम छात्र भी बने। उन्हें स्नात्कोत्तर की परीक्षा लेने वाले प्रथम भारतीय परीक्षक का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे पहले विश्वविद्यालय में संस्कृत, अरबी, फारसी को छोड़कर सभी परीक्षाओं के लिए ब्रिटिश परीक्षक ही नियुक्त किये जाते थे।

सन् 1888 ई0 में उन्होंने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1883 ई0 में उन्होंने एस0पी0 सिन्हा के निर्देशन में पढ़ाई करते हुए कानून विषय में अपना शोध कार्य भी पूर्ण किया। सन् 1889 ई0 में उन्होंने 'शाश्वत एवं स्थायित्व' के कानून विषय पर अपना प्रसिद्ध टैगौर व्याख्यान भी किया। उन्होंने गणित विषय के कुछ मूल शोध प्रबन्धों का अध्ययन करने के लिए फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में भी निपुणता हासिल की। उन्होंने भौतिक विज्ञान के विषयों पर भी अपने शोधपत्र प्रकाशित कराये।

आशुतोष मुकर्जी ने शोधपत्रों के प्रकाशन के साथ–साथ गणित विषय में पुस्तक भी लिखी उनके द्वारा लिखित पुस्तक ''ज्यामिटी ऑफ कॉनिक सेक्शन'' थी यह पुस्तक स्नातक से नीचे की कक्षाओं में पढ़ाने के लिए गणित की मानक पुस्तक मानी जाती थी। अब उस विषय का नाम बदलकर ''विश्लेषणात्मक ज्यामिति'' रख दिया गया है।[3] उन्होंने पिताश्री से मिले संस्कार, गुरूजनों के आर्शीवाद और कड़ी मेहनत के परिणामस्वरूप छात्र जीवन में ही इन उपलब्धियों को हासिल किया।

आशुतोष मुकर्जी लगभग 20 वर्ष की उम्र में ही वैवाहिक बंधन में बंध गए थे। उनका विवाह कलकत्ता के उत्तर में स्थित कष्ष्णानगर कस्बे में रामनारायण भट्टाचार्य की पुत्री के साथ हुआ था। उनकी पत्नी का बचपन का नाम रखाली था लेकिन विवाह के पश्चात उनको योगमाया नाम से जाना गया।

सर की उपाधि से सुशोभित आशुतोष मुकर्जी आधुनिक बंगाल के अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनमें एक कुशल राजनीतिज्ञ और कुशल प्रशासक के गुण विद्यमान थे। सन् 1899 में उन्हें बंगाल विद्यान परिषद् में कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। इसके पश्चात उन्हें 1903 में दूसरी बार कलकत्ता कॉरपोरेशन के प्रतिनिधि के रूप में बंगाल विधान परिषद का सदस्य चुना गया।[4] इस समय तक उनकी ख्याति एक शिक्षा शास्त्री के रूप में दूर–दूर तक फैल चुकी थी। सन् 1902 ई0 में लार्ड कर्जन के शिक्षा मिशन ने विश्वविद्यालयों की गतिविधियों की जांच प्रारम्भ की। इस जांच में विशेषकर कलकत्ता विश्वविद्यालय को ''राजद्रोह के केन्द्र' के रूप में चिहिन्त किया गया। जांच में पाया गया कि कलकत्ता विश्वविद्यालय में औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध युवाओं को प्रेरित और जागरूक किया जा रहा है। इसलिए 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में इन विश्वविद्यालयों को स्वायतता देना उचित नहीं समझा गया। इस तरह सन् 1905 से 1935 के दौरान औपनिवेशिक प्रशासन ने शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण स्थापित करने की पूरी कोशिश की थी।[5] ऐसी परिस्थितियों में आशुतोष मुकर्जी ने लार्ड कर्जन द्वारा लाये गये 'इण्डियन यूनिवर्सिटीज बिल' सन् 1904 की अपने ढंग से रचनात्मक और मुखर रूप में आलोचना की। इण्डियन यूनिवर्सिटीज के सदस्य होने के नाते आशुतोष मुकर्जी की कार्यकुशलता से लार्ड कर्जन बहुत अधिक प्रभावित हुआ तथा उसकी नजर में आशुतोष मुकर्जी ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो सन् 1904 के इण्डियन यूनिवर्सिटीज एक्ट के अनुकूल कमीशन की सिफारिशों को लागू करा सकते थे। परिणामस्वरूप उनकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर लार्ड कर्जन ने उनको कलकत्ता विश्वविद्यालय का उपकुलपति–नियुक्त करने का निर्णय लिया। परन्तु उस समय कोई भी गैर सरकारी व्यक्ति कलकत्ता विश्वविद्यालय का उप कुलपति नहीं बन सकता था इसलिये 1904 में उन्हें कलकत्ता उच्च न्यायालय में न्यायधीश नियुक्त किया गया।[6] उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय की सीनेट और सिंडिकेट का सदस्य भी बनाया गया। इस प्रकार लार्ड कर्जन ने आशुतोष मुकर्जी की 1906 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर नियुक्ति को अन्तिम रूप से अनुमोदित किया। वे 1906 से 1914 तक लगातार चार बार कलकत्ता विश्वविद्यालय मे उपकुलपति रहे थे। इसी पद पर वे 1921–23 के मध्य तक रहे।[7] उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारतीयों के साथ अंग्रेज, जर्मन और अमेरीकी शिक्षकों की भी नियुक्ति की और उसे पूर्व का अग्रण्य विश्वविद्यालय बना दिया। कुछ समय बाद बंगाल के गर्वनर लार्ड लिटन से उनके मतभेद गहराने लगे, परिणामस्वरूप स्वाभिमानी आशुतोष बाबू ने विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद से त्यागपत्र दे दिया। सन 1923 ई0 में जब लार्ड लिटन ने उन्हें दोबारा उपकुलपति नियुक्त करने की बावत कुछ पूर्व शर्तें रखी तो उन्होंने रोष व्यक्त करके उस पद के लिए मना कर दिया।[8] उन्होंने अपनी योग्यता के बल पर लम्बे समय तक कलकत्ता विष्वविद्यालय को सेवा प्रदान की उन्होंने हमेशा शैक्षिक क्षेत्र की स्वायत्ता पर बल दिया भले ही उन्हें अंग्रेज अधिकारियों के विरोध का सामना करना पड़ा हो। सर आशुतोष ने कलकत्ता विश्वविद्यालय को शैक्षणिक संस्थान से अनुसंधान संस्थान में बदले का भी महान कार्य किया।[9] भारतीय विश्वविद्यालयों में कलकत्ता विश्वविद्यालय वेद सम्बन्धी अनुसंधान का भी प्रमुख केन्द्र रहा है।[10]

आशुतोष मुकर्जी की गिनती उन कृषि विशेषज्ञों में भी की जाती है, जो भारतीय कृषकों की समस्याओं से भली–भाँति परिचित रहे। उन्होंने कुछ समय के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में भी शिक्षण कार्य किया। परिषद् के संस्थापक डॉ0 महेन्द्रपाल सिरकार उनके पिता डा0 गंगाप्रसाद के घनिष्ठ मित्र थे उनके आग्रह पर ही सर आशुतोष को कुछ समय के लिए वहाँ शिक्षण कार्य करना पड़ा था।

सर आशुतोष ने किसी भी प्रतिभा को परखने और उसे पोषित करने की अप्रतिम प्रतिभा थी। आशुतोष मुकर्जी ही कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए (एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता) सर सी0बी0 रमण, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ0 मेघनाथ शाह, ज्ञान मुकर्जी, जी0वी0 घोष जैसी प्रतिभाओं को खोजकर लाये, तथा उन्हें तराशकर शिखर तक पहुँचाया। इनमें गणितज्ञ गणेश प्रसाद, दार्शनिक ब्रजेन्द्र नाथ शील, डी0आर0 भण्डारकर, खुदाबख्श, रविन्द्रनाथ टैगोर आदि के नाम है जिन्हें उन्होंने तराशा परखा और प्रसिद्धि के शिखर तक पहुँचाया।

आशुतोष मुकर्जी ने जहाँ एक और कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए नवीन प्रतिभाओं की खोज की वहीं विश्वविद्यालय को बहुआयामी बनाने के लिए नई संस्थाओं के निर्माण में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलकत्ता विश्वविद्यालय कॉलेज ऑफ साइंस की स्थापना उनके द्वारा ही की गई। इसके लिए उन्होंने बहुत से दानवीर लोगों से आर्थिक रूप से भी मदद ली। इस संस्थान की प्रसिद्धि बाद में देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थानों के रूप में होने लगी। इस संस्थान को जिन दानियों ने भरपूर आर्थिक सहयोग दिया उनमें सर तारकनाथ पालित, दरभंगा के महाराजा सर रासबिहारी घोष, खैरा के कुमार गुरूप्रसाद सिंह आदि के नाम प्रमुख है। उनके नाम पर प्रोफेसर के पद और भवन कलकत्ता विश्वविद्यालय में वर्तमान में भी मौजूद है।

सन् 1930 ई0 में जब सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन को विज्ञान के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि के लिये नोबेल पुरूस्कार मिला तो कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए यह बड़े गौरव का विषय था। रमन इस अन्तर्राष्ट्रीय पुरूस्कार को प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय थे। वे सन् 1917 से ही विश्वविद्यालय से जुड़े हुए थे उन्हें यह पुरूस्कार 'रमन प्रभाव' के लिए दिया गया। बंगाल टैक्निकल इंस्टीटयूट जाधवपुर की स्थापना में सर आशुतोष की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वह संस्था वर्तमान में जाधवपुर विश्वविद्यालय के नाम से संचालित है।[11] सर आशुतोष मुकर्जी के अथक प्रयासों से शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम जुड़ सकें।

भारतीय संस्कृति और आर्दर्शों के प्रति ज्वलन्त गौरव के कारण ही सर आशुतोष बंगाल को प्रभावित करने वाली पाश्चात्य सभ्यता की लहर से टक्कर ले सके। उन्होंनें सबसे पहले यह अनुभव किया कि नई पीढ़ी में राष्ट्रीय जीवन और संस्कृति के प्रति निष्ठाभाव उत्पन्न करने के लिए अंग्रेजी के अलावा भारतीय भाषाओं का प्रचार–प्रसार आवश्यक है। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के समय अपने मित्रों से अंग्रेजी की जगह भारतीय भाषाओं को महत्व देने के विषय में विचार व्यक्त किए। इन्ही विचारों को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन 1906 में बंगला भाषा की कक्षाएँ शुरू कराई। अपने स्वतंत्र विचारों के प्रभाव के कारण ही लेंफटिनेंट

गर्वनर के कहने पर भी 'बंग–भंग' का विरोध करने वाले छात्रों के विरूद्ध उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए सन् 1914 में भारतीय भाषाओं में एम0ए0 की कक्षायें शुरू कराई। जिसके लिए बंगला के अलावा भारत की एक और क्षेत्रीय भाषा का अध्ययन आवश्यक रखा गया। आशुतोष मुकर्जी द्वारा किये गये ये कार्य न केवल बंगला भाषा के लिए बल्कि भारतीय शिक्षा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुए।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन, दरभंगा हाल में उनकी अर्द्धमूर्ति के नीचे लिखे गये ये शब्द, ''इन्होंने मातृभाषा को विमाता के गृह में आसीन किया'' उनके इस कार्य की महानता को प्रकट करते हैं।[12] श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने भी कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहते हुए अपने पिताश्री के पद चिन्हों पर चलकर शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नए आयाम जोड़े। उन्होंने भी शिक्षा को उपयोगी एवं सार्थक बनाने पर बल दिया। अपने पिता के समान ही श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने उपकुलपति रहते हुए अंग्रेजी भाषा के एकाधिकार को समाप्त करने का प्रयास किया वहीं दूसरी ओर बंगला, हिन्दी तथा उर्दू आदि भारतीय भाशाओं को उनका स्वाभाविक अधिकार दिलाने का भरसक प्रयास भी किया विषेश रूप से बंगला भाशा को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में इनकी भूमिका बहुत सराहनीय रही।

आशुतोष मुकर्जी विश्वविद्यालयी शिक्षा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहते थे उनका यह भी विचार था कि विश्वविद्यालय शिक्षा पश्चिमी देशों के स्तर की हो। उनकी इच्छा थी कि कलकत्ता विश्वविद्यालय को परीक्षा लेने वाली संस्था से बदलकर शिक्षण और शोध कार्य करने वाली संस्था बनाया जाये। वे विश्वविद्यालय शिक्षा को शैक्षिक और प्रशासनिक रूप में सरकारी हस्तक्षेप और नियंत्रण से मुक्ति के प्रबल पक्षधर थे।[13] अपने पिता आशुतोष मुकर्जी के समान ही ष्यामाप्रसाद मुकर्जी भी षिक्षा की स्वतंत्रता और स्वायत्ता के प्रबल पक्षकार रहे। वे भी षिक्षा को राजनैतिक और सांप्रदायिक मतभेदों से स्वतंत्र और मुक्त रखना चाहते थे। उनका यह भी मानना था कि षैक्षिक क्षेत्र का संचालन और मार्ग दर्षन उन लोगों के हाथ में हो, जिनकी शिक्षा के विकास में सच्ची रूचि हो, जो समाज सेवा की भावना से प्रेरित हो और जिनका चरित्र ऊँचा और महान हो।

आशुतोष मुकर्जी ने विश्वविद्यालय की जो कल्पना की थी, उनके अपने ही शब्दों में इस प्रकार थी–''विश्वविद्यालय को जीवंत और प्रगतिशील हेाना चाहिए। यह समाज का न केवल एक भाग होता है, बल्कि उसका निर्माता भी। इसे सामाजिक जीवन के प्रति उदासीन और अकर्मण्य नहीं होना चाहिये। अगर विश्वविद्यालय समाज से पृथक अत्यावहारिक आधार पर स्थित है तो वह राष्ट्र के लिए मृत हो जायेगा। लेकिन अगर विश्वविद्यालय के कार्यकलाप राष्ट्र के जीवन में ज्यादा से ज्यादा घुले–मिले हैं तो वह अध्यापक की तहर निश्चयात्मक और नेता की तरह प्रभावशाली होगा, जैसा कि पहले कभी नहीं था। विश्वविद्यालय का उद्देश्य समाज की अधिक से अधिक सेवा करना है।[14]

सर आशुतोष ने न्यायधीश और उपकुलपति होने के साथ–साथ विभिन्न आयोगों एवं संस्थाओं के अध्यक्ष पदों का भी निर्वहन किया। वे 1917–19 के मध्य सैडकर आयोग के सदस्य

रहे। माइकल अर्नेस्ट सैडलर इस आयोग के अध्यक्ष थे। इस आयोग को भारतीय शिक्षा की स्थिति विषयक जांच करनी थी। उनकी वेशभूषा और आचार व्यवहार में भारतीयता झलकती थी। वह प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने सैडलर आयोग का सदस्य हाने के नाते धोती और कोर्ट में संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। वे विष्वविद्यालय शिक्षा को शैक्षिक और प्रशासनिक रूप में सरकारी हस्तक्षेप और नियंत्रण से मुक्ति को प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने तीन बार एशियाटिक सोसायटी के अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया। वे सन् 1910 में आशुतोष इंपीरियल (वर्तमान में नेशनल) लाइब्रेरी काउंसिल के अध्यक्ष बने। उन्होनें 80,000 पुस्तकों का अपना निजी संग्रह भी लाईब्रेरी को दान कर दिया। उन पुस्तकों को अलग–अलग वीथिकाओं में रखा गया। सन् 1914 में सर आशुतोष मुकर्जी ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस के उदघाटन सत्र की अध्यक्षता भी की। उन्होंने पाली और रूसी भाषाएँ भी सीखी। भारतीय शिक्षा भी उत्कृष्ठ सेवा के लिए बंगाल के पंडितो ने उन्हें 'सरस्वती' और 'शास्त्र वाचस्पति' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया।[15] ब्रिटिश साम्रज्य ने भी उन्हें 'नाइट' की उपाधि से सम्मानित किया। नाइट की उपाधि मिलने के पश्चात उन्हें सर आशुतोष मुकर्जी नाम से जाना जाने लगा। वायसराय लार्ड लिंटन ने आषुतोश मुकर्जी के षिक्षा के क्षेत्र में दिये गए उनके योगदान का उल्लेख करते हुए कहा था–''सर आशुतोष मुकर्जी अपने समय के सबसे बड़े प्रभावशाली व्यक्ति और बंगाल के प्रतिनिधि थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय के वर्तमान स्वरूप पर उनके 35 वर्षों तक लगन से किये गये परिश्रम की अमिट छाप है। आज विश्वविद्यालय जो कुछ भी है वह सब सर आशुतोष मुकर्जी की सेवा का परिणाम है। इस विश्वविद्यालय का स्नात्कोत्तर विभाग सर आशुतोष मुकर्जी के जीवन की सर्वोत्कृष्ट देन है। वास्तव में बहुत वर्षों तक सर आशुतोष मुकर्जी विश्वविद्यालय थे और विश्वविद्यालय आशुतोष मुकर्जी था।''[16]

''स्वतन्त्रता पहले, स्वतन्त्रता अन्त में और स्वतन्त्रता सर्वदा'' (Freedom First, Freedom Last, Freedom Always) का यह सिद्धान्त उनके जीवन का दर्शन था।[17]

पिताश्री के इसी जीवन दर्शन के सिद्धान्त का उनके पुत्र श्यामाप्रसाद के ऊपर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ा। सर आशुतोष ने श्यामाप्रसाद को शिक्षा एवं कानून के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का सपना देखा था। लेकिन 25 मई सन् 1924 में जब आशुतोष मुकर्जी किसी कार्य से कलकत्ता से पटना गये हुए थे, अचानक पटना में उनका निधन हो गया। पिता श्री की असामयिक मृत्यु से बेटे श्यामाप्रसाद को बड़ा धक्का लगा। उन्होंने अपने पिता के अधूरे सपनों को साकार करने का दृढ निश्चय किया।

आशुतोष मुकर्जी के जीवन, शुद्ध राष्ट्रीयता, उनके उच्चआदर्श उत्कृष्ठ देश–प्रेम, विद्यानुराग, स्वतन्त्र प्रियता और नवभारत के निर्माण की परिकल्पना से श्यामाप्रसाद को अपने जीवन और दृष्टिकोण के निर्माण की नई दिशा मिली। पारिवारिक विरासत ने श्यामाप्रसाद जैसे राष्ट्रवादी जिस चरित्र को गढ़ा, उसके लिए उनके पिता श्री आशुतोष मुकर्जी ने उनको तराशने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। सर आशुतोष मुकर्जी ने छात्र जीवन से लेकर जीवन के अन्तिम क्षणों तक शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किये, जिसके लिये राष्ट्र सदैव उनका ऋणी रहेगा।

निष्कर्ष

निःसंदेह सर आशुतोष मुकर्जी अपने समय के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति, महान शिक्षाविद् और बंगाल के प्रतिनिधि के रूप में जाने जाते हैं। आज भी उनके द्वारा कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए अनेक वर्षों तक किए गए कार्यों की अमिट छाप है।

आशुतोष मुकर्जी ने न केवल एक शिक्षाविद् के रूप मे राष्ट्र निर्माण के कार्य में योगदान किया, बल्कि निडरता के साथ अंग्रेज अधिकारियों के विरूद्ध बगावत करके राष्ट्रवाद का भी समर्थन किया। सर आशुतोष मुकर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय को अनुसंधान केन्द्र के रूप प्रतिस्थापित करने का पुनीत कार्य किया। उन्होंने बंगला भाषा की कक्षाएँ शुरू करवाकर शिक्षा को जनसाधरण तक पहुँचाने का महान कार्य किया। वे आजीवन विश्वविद्यालयी शिक्षा को समाज से जोड़ने का अथक् प्रयास करते रहे। जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर विभाग खुलवाकर शिक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आशुतोष मुकर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए नई प्रतिभाओं को खोजा तथा विश्वविद्यालय को बहुआयामी बनाने के लिए नई संस्थाओं के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बहुत से दानवीर लोगों से आर्थिक रूप से सहायता लेकर शिक्षा के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा स्वयं भी अस्सी हजार पुस्तकों का निजी संग्रह लाइब्रेरी को दान कर दिया। भारतीय शिक्षा की उत्कृष्ट सेवा के लिये ही बंगाल के पण्डितों ने उन्हें सरस्वती ओर शास्त्रवाचस्पति जैसी उपाधियों से सम्मानित किया। सर आशुतोष ने कई महत्वपूर्ण आयोगों के अध्यक्ष व सदस्य के पद पर कार्य करते हुए अपने समकक्षो को अत्यधिक प्रभावित किया। कई बार अंग्रेज अधिकारियों से मतभेद होने पर भी उन्होंने निर्भीकता व साहस के साथ दृढ़तापूर्वक कार्य किये। जिसके कारण अंग्रेज भी उनके ज्ञान और आदर्श का सम्मान करते थे। अपने इसी स्वभाव के कारण उन्हें 'बंगाल का बाघ' उपनाम मिला। वे न्यायाधीश व उपकुलपति जैसे उच्च पदों पर रहते हुए भी देश मे चल रही स्वाधीनता की लहर के प्रति पूर्णतः निष्ठाभाव रखते थे। उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन के समय अपने मित्रों से अंग्रेजी की जगह भारतीय भाषाओं को महत्व देने के विषय में विचार व्यक्त किये, इन विचारों को मूर्त रूप देने के लिये ही उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में बंगला भाषा में पठन–पाठन शुरू कराया।

शिक्षा के क्षेत्र में देश को स्वतंत्र बनाने में आशुतोष मुकर्जी ने सहास एवं निडरतापूर्वक कठिनाइयों से संघर्ष किया जिसके लिए राष्ट्र सदैव आपका स्मरण करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. *मधोक,* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014 पृ0 **9**
2. *मधोक,* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014, पृ. **10.**
3. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ. **19**

4. *मधोक,* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014, पृ. **10**
5. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ. **22**
6. *मधोक,* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014, पृ0 **10**
7. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ0 **21**
8. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ0 **22**
9. पद्मिनी एवं चद्रहरीश, डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, *समकालीन दृष्टि में,* प्रकाशक, नौएडा न्यू प्रा0 लि0, प्रथम संस्करण, 1997, पृ. **25**
10. शास्त्री प्रकाशवीर, *कश्मीर की वेदी पर,* प्रकाशक, डॉ0 हर्षवर्धन, सचिव–डॉ श्यामप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान, नई दिल्ली संस्करण, 2011, पृ. **15**
11. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ0 **21**
12. *मधोक* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014, पृ0 **11**
13. *सिन्हा शशधर,* आशुतोष मुकर्जी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1973, पृ0 **5**
14. *सिन्हा शशधर,* आशुतोष मुकर्जी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1973, पृ0 **76, 77**
15. *राय तथागत,* अप्रतिम नायक डॉ0 शयामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशक संस्करण, 2013, पृ0 **22**
16. सिन्हा शशधर, आशुतोष मुकर्जी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1973, पृ0 **19**
17. *मधोक* प्रो0 बलराज, अमर शहीद डॉ0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, प्रकाशक, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2014, पृ. **12**